शेख़ फ़रीद – सबद ६८

हंसु उडरि कोध्रै पइआ लोकु विडारणि जाइ ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

हंसु उडरि कोध्रै पइआ लोकु विडारणि जाइ ॥
गहिला लोकु न जाणदा हंसु न कोध्रा खाइ ॥६५॥

सार: मनुष्य अक्सर डर को अपनी प्रतिक्रिया का रास्ता दिखाते हैं और हालात को ग़ौर से देखने से पहले ही नतीजे पर पहुँच जाते हैं। अंदाज़ा लगाने की यह आदत एक छोटे रस्ते की तरह काम करती है जिससे स्वयं के बारे में गहराई से सोचने से बचा जाता है। हम सतही संकेतों के आधार पर भरोसा कर उन्हें सत्य, सबूत मान, असलियत समझ लेते हैं और अंत में तथ्यों के बजाय पूर्व-निर्धारित सोच पर निर्णय ले लेते हैं। इस प्राकृतिक बर्ताव से आगे बढ़ने के लिए गहराई से देखने और ज़िंदगी की मुश्किलों और बारीकियों को अपनाने की ज़रूरत है।

हंसु उडरि कोध्रै पइआ लोकु विडारणि जाइ ॥
उड़ता हुआ हंस बाजरे के खेत में उतरता है और लोग उसे भगा देते हैं। यह पल डर के साथ प्रतिक्रिया करने की हमारी आदत को दर्शाता है जो अक्सर अंदाज़ों से चलती है और सिर्फ़ दिखावे के आधार पर निर्णय ले लेती है।

गहिला लोकु न जाणदा हंसु न कोध्रा खाइ ॥६५॥
लापरवाह लोगों को पता नहीं है कि हंस बाजरा नहीं खाता। यह याद दिलाता है कि निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले सतही तौर से हट कर देखने की ज़रूरत है। (६५)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद बताते हैं कि किसी व्यक्ति के चरित्र को अक्सर सतही तौर पर देखकर, सकारात्मक या नकारात्मक तौर से बूझ लिया जाता है। उनके द्वारा की गई कोई भी कार्रवाई उनकी प्रतिष्ठा तय कर सकती है और कोई भी एक कमी उनकी पहचान पर हावी हो सकती है। जल्दी निर्णय लेने वाले

लोग गहराई से ज़्यादा निश्चितता को प्राथमिकता देते हैं और सबसे ज़्यादा दिखने वाले गुणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जब हम जल्दबाज़ी में नतीजे पर पहुँचते हैं तब हम दूसरों को अपने छोटे नज़रिए तक सीमित कर देते हैं और अपनी अंतरात्मा से समझौता करते हैं। वास्तविक समझ वहीं से शुरू होती है जहाँ सतही दृष्टि समाप्त होती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com